शाला पूर्व शिक्षा हेतु पहल

(आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के उपयोग हेतु)

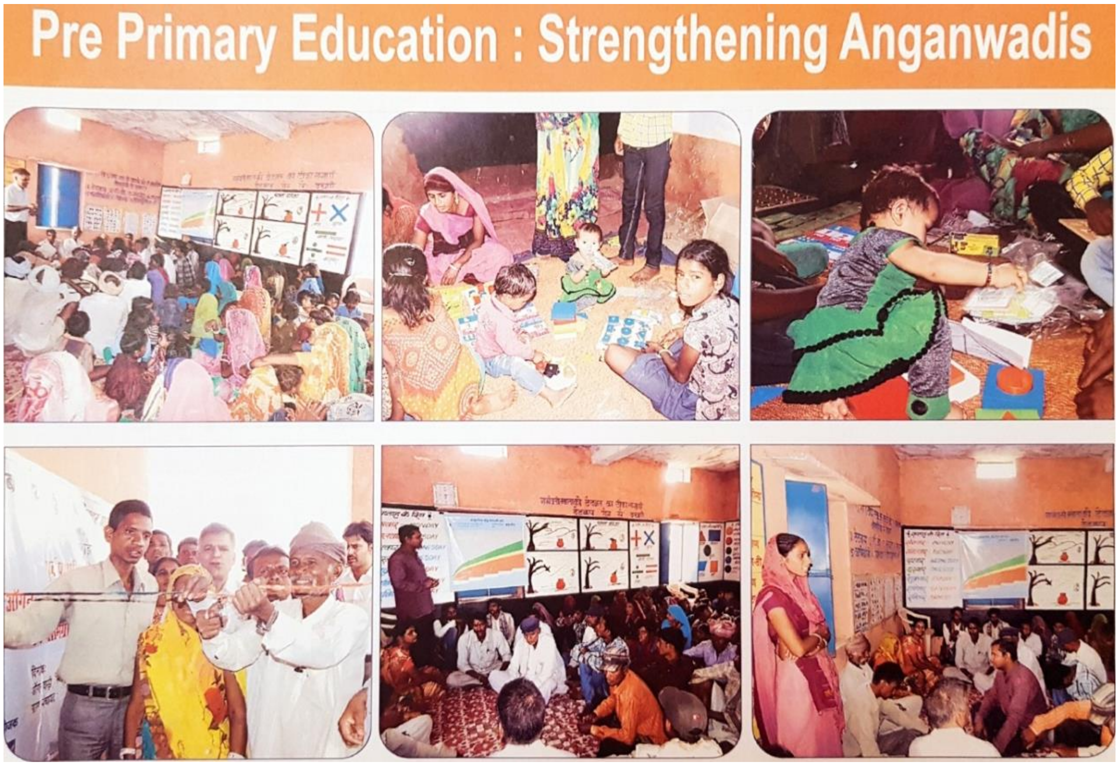

कल्प

(सेन्टर फॉर अन्फोल्डिंग लर्निंग पोटेंशियल्स)

602(o), विश्वामित्र मार्ग, हनुमान नगर विस्तार,

खातीपुरा, जयपुर–302012 (राज.)

E-mail: culpjaipur@gmail.com

फोन नं. 9414068212, 0141 2351212

शाला पूर्व शिक्षा कार्यक्रमः हमारी संकल्पनाए

हमारा शाला पूर्व शिक्षण कार्यकम बच्चों को विद्यालय शिक्षा के लिए तैयार करने का एक प्रयास है जिसमें बच्चों की बहु–आयामी क्षमता का विकास ऐसी गतिविधियां के माध्यम से हो जो कि आयु के अनुरूप प्रासंगिक हो। उनकी ज्ञानेन्द्रियाें का प्रशिक्षण शारीरिक, जीवन कौशल संज्ञानात्मक, सृजनात्मक गतिविधियों के द्वारा किया जा सके।

कुछ मान्यताएं तथा अनुरूप शैक्षिक कियाएं

1. चूकिं बच्चों के लिए ज्ञानेन्द्रियों के अनुभव सीखने का साधन बन कर उनकी विचारशीलता तथा समझ को विकसित करते हैं । अतः ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण विविध गतिविधियों से किया जाएगा।
2. बच्चे अनुकरण तथा अनुभव से सीखते हैं। अतः शिक्षक हर अनुभव प्रक्रियाबद्ध व्यवस्थित उदाहरणों तथा प्रक्रियाओं से देगें, जो सीखने के सिद्धांतों से अनुरूप होंगे।
3. बच्चों का ध्यान एक क्रिया पर कम समय के लिए स्थित होता हैं। अतः सीखने के प्रकरण छोटे समय के तथा सूक्ष्म होंगे तथा विविधता लिए होंगे ताकिं बच्चों का उत्साह एवं रूचि उनमें बनी रहे।
4. बच्चों के अनुभव का संसार उनके आसपास के परिवेश तथा उनकी वस्तुओं से बनता है अतः उन्हे अनुभव देने के लिए उन्हीं वस्तुओं को उपयोग में लाया जाएगा जो आस–पास के परिवेश में उपलब्ध हो एवं बच्चे उनके साथ आसानी से परिचय बना सकें।
5. बच्चों की सामाजिकता को बाल–मित्रता के वातावरण में उनके आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए, औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार किया जाएगा ताकिं वे भाषा तथा गणित के प्रारंभिक अमूर्त संकेतो को पहचान सकें और सीख सकें।
6. बच्चों में खेलों के दौरान प्रतियोगिता को बढ़ावा न देकर सामूहिकता एवं सहभागिता की भावना को बढ़ाने वाली प्रक्रियाएं गतिविधियां एवं अभ्यास होगें जिसमें प्रत्येक बच्चे के विकास में मदद मिले। हमारा प्रयास होगा कि बच्चों में अनावश्यक प्रतियोगिता उससे जनित असफलता एवं हीन भावना को रोका जा सके। वे अपनी आत्म–छवि/आत्मसम्मान को बनाए रख सके।

सीखने के ढांचे की हमारी संकल्पना

बच्चे जो गतिविधियां करते हैं वें अवचेतन मन से तथा मात्र अपने आनन्द के लिये करते हैं। यदि हम उन्हीं गतिविधियों को सावचेत होकर करवाते हैं, उस प्रक्रिया को तकनीकी एवं मानक शब्दावली का उपयोग करते हुए विश्लेषित करते हैं। समझाते हैं तो वह गतिविधि सीखने का माध्यम बन जाती है और उस गतिविधि में निहित प्रत्येक क्रिया के पीछे के सिद्धांत की भी समझ बच्चे में बनती है।

बच्चों में सीखने के व्यवस्थित क्रम के लिये यह जरूरी है कि शिक्षकों के समक्ष एक स्पष्ट अवधारणा एवं संरचना हो जिस पर अमल कर वे अपने कार्य एवं भूमिकाओं को व्यवस्थित ढंग से नियोजित कर सके। इस नियोजन में 'क्या करेगें, 'क्यों करेगें', 'कैसे करेगें', की स्पष्टता शामिल है। हमने बच्चों में सीखने की प्रक्रिया की संरचना में तीन घटकों को सम्मिलित किया है। ये हैं –

1. शारीरिक तथा जीवन कौशल विकास।

2. सृजनात्मक विकास (कला, हस्तकार्य, गायन, कठपुतली आदि माध्यमों के उपयोग से)

3. ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण तथा संज्ञानात्मक विकास।

सीखने के क्रम को एक तिमाही योजना में ढाला गया है। जिसके प्रत्येक घटक के अन्तर्गत दस सुविचारित गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है। सीखने के प्रकरण छोटे, कम समय वाले एवं विविधता लिये हुए होंगे। उनमें पुनः अभ्यास पर बल दिया गया है। गतिविधियों के चयन में इस अनुभव को आधार बनाया

गया है कि उन्हें बच्चों के सीखने की सबसे प्रांरभिक प्रक्रिया के अनुरूप रखा जाए।

प्रथम आयु वर्ग (2.5 वर्ष से 3.5 वर्ष): बच्चा सबसे पहले अंगुलियों, हाथों एवं बाहों का उपयोग करना सीखते हैं। उनके सीखने की यह प्रक्रिया स्वतः एवं अकस्मात होती है। शाला पूर्व शिक्षण कार्यक्रम बच्चों की इस स्वतः स्फर्तू एवं अकस्मात क्रियाओं को सीखने एवं शिक्षण से सम्बद्ध करने की भूमिका निभाते हैं। इसीलिए, इन स्वाभाविक क्रियाओं को "सीखने की गतिविधियों" में व्यवस्थित रूप से नियोजित किया जाना जरूरी हो जाता है।

इसमें बच्चों की सूक्ष्म एवं स्थूल मांसपेशियों के समुचित विकास पर ध्यान दिया जाना महत्वपूर्ण हो जाता है। बच्चों पर हुए वैश्विक शोध भी बताते हैं कि विभिन्न संस्कृतियों में बच्चों के हाथ एवं अंगुलियों के खेलों से उनकी मांसपेशियों का समुचित व्यायाम होता है। उससे शैक्षिक विकास के तौर पर उनका लेखन कौशल बनता है, सुलेख बनता है तथा उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास पर भी अनुकूल असर पड़ता है। क्योंकि अंगुलियों के पोरों पर तथा हथेली की नसों का सीधा संबधं मस्तिष्क से है और ताली बजाने के विभिन्न खेलों/व्यायामों से सीधा असर मस्तिष्क की कोशिकाओं पर होता है। पूरे विश्व/विभिन्न संस्कृतियों में ताल–मय ताली बजाने एवं गाने के हजारों किस्म के खेल प्रचलित हैं।

आधुनिक शिक्षण प्रणाली में बाजारीकरण के कारण परम्परागत खेलों, सीखने की प्रक्रिया में अपने परिवेश में उपलब्ध संसाधनों/वस्तुओं का उपयोग करना एवं उनका महत्व समझना प्रायः लुप्त होता जा रहा है। जो कि शिक्षा की बुनियादी संस्कृति के विरूद्ध है।

हमारा प्रयास इन लोक सांस्कृतिक विधाओं और सीखने/विकसित होने की प्रक्रियाओं को पुनर्जीवित करने की ओर है ताकिं बच्चों के सीखने की प्रक्रिया स्वाभाविक एवं अर्थ–पूर्ण हो सके। उनके परिवेश समाज तथा सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ सके।

दूसरे आयु वर्ग (3.5 वर्ष से 4.5 वर्ष): गतिविधियों का चयन हाथ एवं पैर दोनों के उपयोग को ध्यान में रखते हुए किया गया है। इस आयु वर्ग के बच्चे शारीरिक रूप से अधिक सक्रिय होते हैं। उन्हें चलने, कदम ताल, दौड़ने, उछलने, ठोकर मारने एवं कूदने की क्रियाओं में अधिक रूचि होती है। गतिविधियों का चयन करते समय उक्त क्रियाओं के दौरान संतुलन बनाने वाले अभ्यासों को शामिल करने पर ध्यान में रखा गया है। उदाहरणार्थ, धरती पर लाइन खींच कर उस पर सीधा चलना, कैट–वॉक करना, 'बीम' पर चलना, नंगे पैर आँख बंद कर चलना ताकिं स्पर्श से रास्ता पहचान सकें जो कि संज्ञानात्मक विकास की प्रक्रिया का एक हिस्सा है।

इस आयु वर्ग में भी 10 गतिविधियां नियोजित होंगी जिनका अभ्यास एक तिमाही तक किया जाएगा। इस अभ्यास में शारीरिक, सृजनात्मक एवं संज्ञानात्मक विकास के घटकों पर विभिन्न तरीकों से अभ्यास कराया जाएगा।

तीसरे आयु वर्ग (4.5 वर्ष से 5.5 वर्ष): गतिविधियों का चयन पूरे शरीर की क्रियाओं और गतिशीलता को ध्यान में रख कर किया गया है। जैसे–फिसलपट्‌टी पर फिसलना, झूला खड़े होकर झूलना, रस्सी एंव व्यायाम वाले पोल पर लटकना, गुलाटी खाना, चढ़ना, उतरना, रैंगना, इत्यादि।

प्रत्येक आयु वर्ग में शारीरिक तथा जीवन कौशल विकास गतिविधियों के चयन एवं निर्धारण के उपरांत प्रत्येक शारीरिक गतिविधि से जुड़ी हुई दो अन्य घटकों की गतिविधियां: (1)सृजनात्म विकास (कला, हस्तकार्य, गायन, कठपुतली आदि माध्यमों के उपयोग से) तथा (2) ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षण तथा संज्ञानात्मक विकास की गतिविधियों को भी नियोजित किया गया है। गतिविधियों में अभ्याास पर बल देते हुए बच्चे में विभिन्न विषयों पर्यावरण एवं समुदाय संबंधों की समझ बनाने तथा उसमें व्यक्तिगत उचित कार्य व्यवहारों को पनपाने का प्रयास किया गया है।

सीखने की अधिकांश सामग्री बाजार से निर्मित रेडीमेट सामग्री लाने के स्थान पर बच्चों के परिवेश में उपलब्ध सामग्री का उपयोग करते हुए शिक्षण एवं बच्चों द्वारा मिल–जुल कर कक्षा–कक्ष अथवा आंगनबाड़ी परिसर में ही सीखने एवं अभ्यास हेतु तैयार करने का निर्णय लिया गया है। यह निर्माण हमारी इस मान्यता के अनुरूप है जिसमे सीखना–सिखाना परिवेश से जुड़ा हुआ, सहज, कम खर्चीला एवं सांसकृतिक–सामाजिक मूल्यों को संबधित करने वाला होना चाहिए। अतः इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री एवं उस सामग्री के पीछे की मान्यताएं भी आयातित न हो कर स्थानीय ही होनी चाहिए। जिन्हे बच्चे एवं शिक्षक सहजता से समझ सकें, उनमें जुड़ सकें और अपना सकें।
बच्चों के लिये दिन के अन्त में शिक्षक एक कार्य–प्रत्रक/वर्कशीट बनाई जाएगी जिसमें वे अभ्यास कर सकेगें:

- चित्र का चित्र से मिलान।
- चित्र का शब्द से मिलान।

- रेखा–चित्र बनाना।

रेखा–चित्रों से भावों की पहचान करना भी इसी प्रक्रिया का हिस्सा होगा। यह चित्र एवं शब्द उस दिन करवाई गयी गतिविधियों, गाये गए लघु गीतों में आये विषय एवं शब्द प्रसंगों से ही सम्बंधित होगें ताकिं बच्चा किसी विषय को विभिन्न अभ्यासों (शारीरिक गतिविधि, सृजनातमक कार्य एवं इन्द्रिय प्रशिक्षण) से भली प्रकार समझ सके याद रख सके।

सृजनात्मक विकास की गतिविधियों में हम कला, हस्तकार्य, गायन, कठपुतली, आदि माध्यमों के उपयोग से बच्चों को सीखने में मदद कर पाएंगे, हिन्दी एवं अंग्रेजी लघु कविताओं के संकलन एवं निर्माण तथा उसके पीछे की हमारी मान्यताओं को हमने निम्न लिखित विवरण में समेटा है।

हिन्दी लघु कविताओं का संकलन

> हमारी कविताएं बच्चे के संज्ञानात्मक विकास के लिये तथा संसार की समझ विकसित करने हेतु हैं। अतः हमने इन्हें बच्चे के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश से संकलित किया गया है तथा 40–50 कविताएं बच्चों के साथ कार्य करने के दौरान संकलन किया गया है।

कविताएं प्रासंगिक एवं अर्थवान हैं। हमने बच्चों के साथ शिक्षा पर कार्य करने वाले व्यक्तियों एवं शिक्षकों के अनुभवों के आधार पर कविताओं का संकलन किया है। उन कविताओं को अनुभवों के आधार पर पुनः लिखा गया, ताकिं इनका समुचित उपयोग शाला–पूर्व शिक्षा के शिक्षण सामग्री के रूप में किया जा सके।
इस प्रक्रिया को अपनाने के पीछे हमारा उद्देश्य यह है कि बच्चे के सीखने के क्रम को समाज, संस्कृति एवं परिवेश से जोड़कर अर्थपूर्ण बनाया जाए। यह सीखने के इस मूलभूत सिंद्धान्त के अनुरूप है, जो कि यह बतलाता है कि ''सीखने की प्रक्रिया" यदि परिवेश एवं संस्कृति से नहीं जुड़ी है, तो वह यांत्रिक है। उससे बच्चे की समझ विकसित होती एवं जो रटाया जा रहा है, उसकी मानसिक छवियाँ बच्चे के मस्तिष्क में नहीं बनती। परिणामस्वरूप, बच्चे किसी भी रटाई गई चीज को प्रायः जल्दी ही भूल जाते हैं। सीखने की प्रक्रिया में चीजों से सम्बद्धता (एसोसियेशन) का स्थापित होना, बच्चे के मस्तिष्क में उसकी छवियाँ निर्मित होना, उस विषय संबंधी सीख को स्थायी बनाता है।
लघु कविताओं के माध्यम से बच्चों में शब्दकोष के निमार्ण में भी मदद मिलेगी। कविताओं में उपयोग में लाए गए शब्दों से बच्चे उस वस्तु की मानसिक छवि एवं शब्द–चित्र बना कर अपने मस्तिष्क में रखेंगें तथा उन्हें याद रख सकेंगें।

अंग्रेजी की लघु कविताएं

उपलब्ध शोध एवं हमारा अनुभव यह बताता है कि बच्चों के लिए आस–पास के परिवेश की वस्तुओं पर बनी कविताएं जो उनके गुण–धर्मों को वर्णित करती हो, ज्यादा सार्थक होती हैं। इसके पीछे मान्यता यह है कि बच्चें के संज्ञानात्मक विकास में उसके आसपास उपलब्ध चीजों के रंग, आकार, उपयोग के बारे में उसकी समझ उस वस्तु को पहचानने में मददगार बनती है। अतः चार पंक्तियों की कविताएं अंग्रेजी भाषा में हमारे शिक्षक समूह के साथ मिलकर सामूहिक गतिविधि के तौर पर बनाई हैं। लघु कविताओं से बच्चा अपने आपको जोड़कर देखता है, जो कि बच्चे की परसोनीफिकेशन (अपने आपसे बात) करने की स्वाभाविक वृतियों के अनुरूप है। अतः इनमें स्थानीयता का होना बहुत जरूरी है।
यह प्रयास बच्चे के सीखने की प्रक्रिया को उसकी जड़ों से जोड़ने का उपक्रम है। क्योंकि तमाम उपलब्ध अंग्रेजी लघु कविताएं (Rhymes) बाहरी परिवेश में बनी एवं उसी से जुड़ी हैं। जो कि उस परिवेश के बच्चों के लिए उपयुक्त हो सकती हैं किन्तु हमारे बच्चों के लिए नहीं। हमारे बच्चों को सिर्फ ये कविताएं रटवाई

जा सकती हैं। लेकिन उनके अर्थ उन्हें समझ नहीं आते। हमारे शिक्षक समूह द्वारा सृजित कविताएं बच्चे के संज्ञानात्मक विकास में मददगार होगी। जिससे उसका मौखिक शब्द भण्डार विकसित हो सके एवं उसका दृश्य देखकर चीजों को व्यक्त कर सकने की शब्दावली (Sight Vocabulary) भी गढ़ी जा सके। हमारी हिन्दी एवं अंग्रेजी लघु कविताओं का अभ्यास बच्चे के शारीरिक, सज्ञांनात्मक एवं सृजनात्मक कौशलों को विकसित करने में मदगार होगा।

अतः इन्हे उस दिन के लिए नियोजित गतिविधियों के संदर्भ में ही गढ़ा गया हैं तथा विषयानुरूप है। शिक्षक प्रत्येक अवधारणा को सिखाने के लिए मूर्त आकृतियॉ के उदाहरण देने का तरीका अपनाएंगे। सम्पूर्ण शाला–पूर्व शिक्षण की अवधि के दौरान अर्थात कक्षा एक में पहुँचने तक की तैयारी के रूप में बच्चों को क्या–क्या सीख लेना चाहिए इसे निम्न परिणामों के रूप में नियोजित किया गया है : (1) ऐसा दिखता है, (2) ऐसे बनाते है, (3) ऐसे करते है एवं (4) ऐसे बोलते है।

1. पहचान बनाना

1.1. वर्णमाला हिन्दी

1.2. वर्णमाला अंग्रजी

1.3. आकारों की पहचान गोल, चौरस, बेलनाकार

1.3.1. **गोलाकार** (अंडाकार एवं अर्ध–वृत) उदाहरणः चॉद, सूरज, रोटी, गेंद, रिंग, पहिया, चूड़ी, बिंदी, बटन, टायर, घड़ी इत्यादि।

1.3.2. **चौरस** (वर्गाकार एवं आयताकार): चौकी, पाटिया, टेबल, टीवी, कम्प्यूटर–मॉनिटर, पतंग, रेडियों, किताब, मोबाईल, इत्यादि।

1.3.3. **बैलनाकारः** डिब्बा, गिलास, बाल्टी, बोतल, गमला, बेलन, कप, मग,टब, इत्यादि।

1.4. **संख्या पूर्व अवधारणा** (कम–ज्यादा, भरा–खाली, हल्का–भारी, छोटा–बड़ा, पास–दूर, ऊपर–नीचे, आगे–पीछे, बीच में)

1.5. अंकों की पहचान गिनती 1–20 तक, दशक संख्यायें

2. शब्दावली विकास

2.1. **100 हिन्दी शब्द जानना उनके अर्थ समझनाः** उपयोग में ली जा रही कविताओं तथा की जा रही गतिविधियों के दौरान ही शब्दों एवं अर्थो को सिखया जाना है।

2.2. **50 अंग्रजी शब्द जानना उनके अर्थ समझनाः** उपयोग में ली जा रही कविताओं तथा की जा रही गतिविधियों के दौरान ही शब्दों एवं अर्थो को सिखया जाना है।

3. सामाजिक एवं जीवन कौशल

3.1. यह बच्चों के सामाजिक व्यवहारों के निर्माण का चरण है। अतः शाला में किए जा रहे प्रत्येक व्यवहार एवं उनके सामाजिक अर्थो को सभी कार्यकलापों/गतिविधियों के दौरान सिखाया जाना है।

3.1.2. इसी चरण के दौरान सद्व्यवहार एवं परिवेश की साफ–सफाई, सामूहिकता, सहायता का भाव, आदर, स्नेह, सार–संभाल, इत्यादि–

4. सृजनात्मक एवं हस्त–कौशलः

4.1. **बिन्दु–चित्र आकृतियों को पूरा करनाः** विभिन्न बिन्दु आकृतियों को पेन्सिल से मिलाना एवं उस आकृति को समझना, पहचानना, नाम जानना, उसके बारे में जानना, इत्यादि

4.2. **बिन्दु–चित्र आकृतियों को सजानाः** ढूडल से कटी हुई चिंदियों से, रंगों से, लाईनो से, ब्रश–रंगो से, इत्यादि

4.3. **अपने आप से नई चीजें सृजित करनाः** कागज, पेन्सिल, कबाड़, आस–पास के पर्यावरण के सामान, इत्यादि

प्रत्येक सप्ताह शिक्षक वर्क–शीट तैयार करेगें

↓

उस सप्ताह की गतिविधियों से सम्बद्ध कविता को चार्ट या बोर्ड पर लिख कर चित्र के साथ डिस्प्ले करेंगे

↓

पुनः अंगुली रखकर पीछे–2 शिशुओं से उसको दोहराने के लिए कहेंगे

↓

शिक्षक अपने पीछे–2 शिशुओं से गवाएंगे

↓

क्रियाओं के साथ शिक्षक गायेंगे एवं अपने पीछे शिशुओं से गवाएंगे

↓

क्रियाओं के साथ शिक्षक सामुहिकरूप से अपने पीछे शिशुओं से गवाएंगे

↓

अकेले अकेले सभी शिशुओं से अभ्यास करवाना

आयु वर्गः 2.5 से 3.5 वर्ष (प्ले ग्रुप)

प्रथम तिमाही		
शरीरिक तथा जीवन कौशल विकास	**सृजनात्मक विकास, कला, गीत, हस्तकार्य, कठपुतली आदि गतिविधियां स्थानीय परिवेश में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग**	**ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण तथा संज्ञानात्मक विकास**
हाथों की गतिविधियां 1. हस्त क्रियांएः हाथ हिलाना / लहराना	बच्चों द्वारा हाथ सटैपिंग हाथ छापना (2 सप्ताह)	गीला व सुखा
2. हाथ से अभिवादन नमस्ते,पांव छूना, हाथ मिलाना, सैल्यूट करना	शिशुओं द्वारा नमस्ते करने की आदत डालना (2 सप्ताह)	गीला व सुखा
3. हाथों से चीजें उठाना तथा करीने से रखना, श्रेणी एवं वर्गानुसार	अंगूठा स्टेपिंग (2 सप्ताह)	ठंड़ा , गर्म
4. लयात्मक ताली बजाना–1	हाथ स्टिक पपेट	चिकना, खुरदरा
5. लयात्मक ताली बजाना–2		चिकना खुरदरा
6. इशारे पर ताली बजाना तथा रोचक		
7. हाथ धोना	अंगुली पपेट	पुट्टीन
8. नाखुन को काटना	क्रिया गीत गाना/दोहराना	पुट्टीन
9. हाथ का संकेत–1		
10. हाथ का संकेत–2		
दूसरी तिमाही		
11. हाथ के सभी भागों की समझ बनाना।	क्रिया गीत गाना/दोहराना (गुदगुदी गीत): 2सप्ताह	सख्त गरम
12. हाथ में गुदगदी करना।		
13. अंगुलियों के नामों की पहचान, फिंगर को गीत के अनुसार	फिंगर प्ले गीतः	हल्का भारी
14. अंगुलियों में पतली लम्बी चीजें पकड़ना	फिंगर प्ले गीतः	
15. अंगुलियों के संकेत	पेपर फोल्डिंग करना	सृजन करना
16. कलाई की क्रियाएं		
17. अंगुलियों से ढक्कन खोलना तथा बंद करना।	फिंगर प्ले गीतः	हल्का भारी
18. हाथो से गेंद फैंकना तथा पकड़ना	ट्रेसिंग पिंक्चरः चित्र–आकृतियों को ट्रेसिंग से छापना	
19. अंगुलियों से स्पिरिंग,टॉप, फिरकी, लट्टू घुमाना		मिटटी से खेल
20. गेंद ऊपर फैंकना तथा पकड़ना	ट्रेसिंग पिंक्चरः चित्र–आकृतियों को ट्रेसिंग से छापना	गीली मिट्टी से हाथ के गिर्द घरौदा बनाना
तीसरी तिमाही		
21. हाथों से मिट्टी का खेल–1	कागज में छेंद कर मोटे धागे से लेसिंग करना	आंख बन्द कर चीजों को पहचानना
22. हाथों से मिट्टी का खेल–2		
23. हाथों से गेंद को बाल्टी में डालना	पेपर फोल्ड़िगं से पक्षी बनाना।	चित्र संकेत बोर्ड गेम

24. हाथ से मछली खिलौना बनाना	पक्षी गीत गवाना	
25. एक हाथ से दूसरे हाथ की अंगुलियां बंद करना	पेपर फोल्ड़िगं से पक्षी बनाना, पक्षी गीत गवाना	शब्द बोर्ड गेम
26. एक गेंद को लुढका कर दूसरी दूसरी गेंद से भिड़ाना		शब्द बोर्ड गैम
27. कांच खेल द्वारा गेंद को अर्थ में से गुजारना	पेपर फोल्ड़िग से पक्षी बनाना, स्टीक पपेट बनाना	डिब्बे को रेत से छोटे बर्तनों की मदद से भरना
28. कागज की हवाई जहाज बना कर उसे फेंकना		
29. चीजों को लाइन में रखना	ट्रेसिंग तथा कलरिंग, चित्रों–आकृतियों को ट्रेसिंग से छाप कर उसमें रंग भरना	पुट्टीन से सितारा बनाना
30. चीजों की मीनार बनाना		
पूर्व की तीन तिमाहियों के दौरान करवाई गयी सभी गतिविधियों का दोहरान चौथी एवं अंतिम तिमाही में होगा।		

आयु वर्ग 3.5 से 4.5 वर्ष के शिशु

प्रथम तिमाही		
शारीरिक तथा जीवन–कौशल विकास	**सृजनात्मक विकास कला, गीत, हस्तकार्य, कठपुतली आदि गतिविधियां स्थानीय परिवेश में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग**	**ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण तथा संज्ञानात्मक विकास**
पैंरो की गतिविधियां 1. पैर हिलाने की गतिविधियां	आयु वर्ग 2.5 से 3.5 वर्ष के बच्चे हेतु इस श्रेणी में ऊपर दिए गए उदाहरण को देखकर शिक्षक गतिविधियां लिखे तथा अभ्यास करवाएं	आयु वर्ग 2.5 से 3.5 वर्ष के बच्चे हेतु इस श्रेणी में ऊपर दिए गए उदाहरण को देखकर शिक्षक गतिविधियां लिखे तथा अभ्यास करवाएं
2. सीधा चलना, जमीन पर लकीर बना कर उस पर सीधा चलना		
3. आगे की ओर चलना,पीछे की और चलना		
4. बगल की ओर चलना		
5. कदम ताल करना		
6. एक ही स्थान पर उछालना		
7. टागे की तरफ उछालना		
8. दायीं बगल की तरफ उछलना, बांयी बगल की तरफ उछालना 9. कुत्ता वॉक		

10. केट वॉक		
दूसरी तिमाही		
शारीरिक तथा जीवन–कौशल विकास	**सृजनात्मक विकास कला, गीत, हस्तकार्य, कठपुतली आदि गतिविधियां स्थानीय परिवेश में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग**	**ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण तथा संज्ञानात्मक विकास**
कूदने की गतिविधि 11. एक फुट की ऊँचाई या एक सीढ़ी पर से कूदना	आयु वर्ग 2.5 से 3.5 वर्ष के बच्चे हेतु इस श्रेणी में ऊपर दिए गए उदाहरण को देखकर शिक्षक गतिविधियां लिखे तथा अभ्यास करवाएं	आयु वर्ग 2.5 से 3.5 वर्ष के बच्चे हेतु इस श्रेणी में ऊपर दिए गए उदाहरण को देखकर शिक्षक गतिविधियां लिखे तथा अभ्यास करवाएं
12. एक स्थान पर खडे होकर सॉफ्ट बॉल को ठोकर मारना, उछालना		
13. भाग कर सॉफ्ट बॉल को ठोकर मारना, उछालना		
14. मेंढक कूद करना		
15. दोनों हाथ एवं दोनों पैरों के बल पर सीधा चलना		
16. दोनों हाथ एवं दोनों पैरों के बल पर पीछे चलना		
17. दोनों हाथ पैर फेलाकर गोल गोल घूमना।		
18. पीठ के बल लेट कर साइकिलिंग करना		
19. एक स्थान पर हाथ हिला कर चलने की मुद्राएँ बनाना		
20. समान गति से तेज चलना		
तीसरी तिमाही		
21. बॉल को दौड़ कर पकड़ना		
22. एक स्थान पर रस्सी कूदना		
23. औंधे लेट कर शरीर को हल्का छोड़कर हाथों के बल पर आगे की ओर घसीटना		
24. घुटनों के बल पर आगे की ओर रेंगना		
25. दोनों हाथो एवं पैरों के		

बल पर साइड़ में चलना		
26. निर्देशानुसार मार्च–पास्ट, कदम–ताल करना		
27. एक ही स्थान पर खड़े होकर निर्देशानुसार दायें–बाएं, आगे–पीछे मुछना		
28. मार्च–पास्ट, कदम–ताल करते हुए निर्देसानुसार दायें–बाएं, आगे–पीछे मुछना		
29. एक टांग पर उछलते हुए आगे की ओर चलना		
30. हाथी वॉकः दोनो हाथों एवं पैरों के बल पर शरीर को हिलाते हुए झूम कर आगे की ओर कदम बढ़ाना		
पूर्व की तीन तिमाहियों के दौरान करवाई गयी सभी गतिविधियों का दोहरान चौथी एवं अंतिम तिमाही में होगा।		

आयु वर्ग 4.5 से 5.5 वर्ष

प्रथम तिमाही		
शारीरिक तथा जीवन–कौशल विकास	**सृजनात्मक विकास कला, गीत, हस्तकार्य, कठपुतली आदि गतिविधियां स्थानीय परिवेश में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग**	**ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण तथा संज्ञानात्मक विकास**
पूरे शरीर की क्रियाशीलता की गतिविधियां 1. सीड़ी चढ़ना, उतरना	आयु वर्ग 2.5 से 3.5 वर्ष के बच्चे हेतु इस श्रेणी में ऊपर दिए गए उदाहरण को देखकर शिक्षक गतिविधियां लिखे तथा अभ्यास करवाएं	आयु वर्ग 2.5 से 3.5 वर्ष के बच्चे हेतु इस श्रेणी में ऊपर दिए गए उदाहरण को देखकर शिक्षक गतिविधियां लिखे तथा अभ्यास करवाएं
2. फिसलना		
3. खड़े होकर झूलना		
4. रोल करना, गुलाटी खाना		
5. दौड़ना		
6. एक टांग से भागना		
7. एक टांग के खेल खेलना		

8. विष अमृत खेल खेलना		
9. डॉज बॉल खेल खेलना		
10. रेंगना		
दूसरी तिमाही		
शारीरिक तथा जीवन–कौशल विकास	**सृजनात्मक विकास कला, गीत, हस्तकार्य, कठपुतली आदि गतिविधियां (स्थानीय परिवेश में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग**	**ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण तथा संज्ञानात्मक विकास**
11. धरती पर ईंट की पट्टी बनाकर उस पर बिना हाथ फैलाये चलना	आयु वर्ग 2.5 से 3.5 वर्ष के बच्चे हेतु इस श्रेणी में ऊपर दिए गए उदाहरण को देखकर शिक्षक गतिविधियां लिखे तथा अभ्यास करवाएं	आयु वर्ग 2.5 से 3.5 वर्ष के बच्चे हेतु इस श्रेणी में ऊपर दिए गए उदाहरण को देखकर शिक्षक गतिविधियां लिखे तथा अभ्यास करवाएं
12. धरती पर ईंट की पट्टी बनाकर उस पर दोनों हाथ फैलाये चलना		
13. पुराने टायरों से टर्नल बनाकर उसके बीच से रेंगकर निकलना		
14. रिले रैस–1		
15. रिले रैंस–2		
16. रिले रेस–3		
17. एक स्थान पर रस्सी कूदना		
18. भागते हुए रस्सी कूदना		
19. पोल से लटक कर आगे की ओर बढ़ना		
20. पुट्ठे के बॉक्स को बांध बनाकर उसके ऊपर से कूदना।		

तीसरी तिमाही		
शारीरिक तथा जीवन–कौशल विकास	**सृजनात्मक विकास कला, गीत, हस्तकार्य, कठपुतली आदि गतिविधियां स्थानीय परिवेश में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग**	**ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण तथा संज्ञानात्मक विकास**
21. बैठे हुए दोनों हथों पर झूलाना	आयु वर्ग 2.5 से 3.5 वर्ष के बच्चे हेतु इस श्रेणी में ऊपर दिए गए उदाहरण को देखकर शिक्षक गतिविधियां लिखे तथा अभ्यास करवाएं	आयु वर्ग 2.5 से 3.5 वर्ष के बच्चे हेतु इस श्रेणी में ऊपर दिए गए उदाहरण को देखकर शिक्षक गतिविधियां लिखे तथा अभ्यास करवाएं
22. पीठ के बल लेटे हुए रॉकिंग झूलना		
23. पोल पर चढ़ना		
24. रिंग में पास से बॉल फेंकना		
25. सैक(बोरा) रेस		
26. रिंग में 5 फुट की दूरी से बॉल फेंकना		
27. एक ही स्थान पर निर्देशानुसार दायें–बाएं आगे–पीछे सर को घुमाने की क्रियाएं करना।		
28. आलथी–पालथी बैठकर, तितली के पंखों की तरह हिलाना		
29. स्टैपू का खेल		
30. अर्ध्वाकार जंगल जिम पर चढ़ना		
पूर्व की तीन तिमाहियों के दौरान करवाई गयी सभी गतिविधियों का दोहरान चौथी एवं अंतिम तिमाही में होगा।		

नोटः प्राकथन और वर्ग की तीनों घटको की गतिविधियों को उदाहरण के रूप में संयोजित किया गया है, किन्तु अन्य दो आयु समूहों की मात्र शारीरिक गतिविधियों को ही चिन्हित किया गया है एवं शिक्षकों से अपेक्षा की जा रही है कि वे स्वयं उनसे सम्बन्ध अन्य दो घटकों की गतिविधियों को सोचे एवं नियोजित करें। अपने परिवेश में उपलब्ध एवं आस पास से संकलित सामग्री के उपयोग से शिक्षक सामग्री तैयार करेंगे एवं बच्चों से अभ्यास करवाएंगे—

सुझाई गयी शिक्षण सामग्री

1. पुराने बटन
2. प्लास्टिक की चूडियां
3. पुरानी पत्रिकाएं
4. रद्दी अखबार
5. चिकने गोल पत्थर
6. विभिन्न रंगों की बिन्दियां
7. बोतल के ढक्कन
8. विभिन्न प्रकार के पंख
9. माला के मनके
10. धागे की खाली हुई सेल्स
11. विभिन्न आकारों की बांस की टोकरियां, विभिन्न रंगों प्रकारों से पेंट की हुई (सहायक शिक्षण सामग्री रखने के लिए)
12. रस्सी कूद की रस्सियां
13. विभिन्न प्रकार की आकारों,रंगों की सॉफ्ट गेंदे
14. आइसक्रिम स्टिक्स
15. टूथपिक्स
16. माचिस की तीलियां
17. सरकंडे
18. टूथ ब्रुश
19. ब्लू स्टिकस
20. विभिन्न प्रकार के पेस्टिंग टेप्स
21. विभिन्न रंगों एवं आकारों की ड्राइगं शीट्स
22. वाटर कलर्स ब्रुश
23. स्केज पेन सेट्स
24. क्रयोन रंग
25. रंगीन पेपर्स, प्लेन पेपर्स,ग्लेस पेपर्स
26. कलर रिबंस

27. रबड़

28. पेन्सिल

29. चाक

30. शार्पनर

31. तैयार सामग्री डिस्प्ले के लिए डोरी

32. रिंग्स

33. लकड़ी के ज्यामितीय सेप्स /आकार

34. लकड़ी के हिन्दी आंग्रेजी वर्णमाला चित्र /आकार

35. विभिन्न आकार की कैंचियां (आगे से नुकीली / पैनी नहीं हो)

36. कॉमन पत्ते पतियां

37. लकड़ी के फलो के सेप्स

38. फिरकी, लट्टू,पासे

39. प्लास्टिक टब (रंग घोलने, पानी की गतिविधियों के लिए)

नोटः इन सामग्री के उपयोग से शिक्षक, विविध शिक्षण सामग्री स्वयं तैयार करेंगे/ शिशुओं से करवाएंगे तथा डिस्प्ले करेंगे, उपयोग में लायेंगे।

इति : कल्प जयपुर